Written by दयानंद पांडेय
Thursday, 12 May 2011 14:18

पहले शोख फरि सेक्स बम से अभनिय की बढ़त बनाने वाली रेखा की शोहरत □क संजीदा अभनिेत्री के स□र में बदल जा□गी यह भला कसिे मालूम था? सावन भादो से शुरुआत करने वाली रेखा ने जब चार दशक पहले सेल्यूलाइड की दुनिया में सर्राटा भरा था तो लोग कहते थे कि उसे शऊर नहीं. न अभनिय का न जीने का. लेकनि वह तब की तारीख थी. अब की तारीख में रेखा की कै□यित बदल गई है. अभनिय का शऊर और अपने जादू का जलवा तो वह कई बरसों से जता ही रही थीं, जीने की ललक और उसे करीने से कल□ देने का शऊर भी उन्हें अब आ ही गया है.

वह जब तब इस की कै□यित और उस की त□सील देती, बांचती और परोसती ही रहती हैं. कई बार तो मुझे लगता है कि काश कि मैं औरत होता. और कि औरत हो कर भी मैं रेखा होता. सचमुच उन से बड़ा रश्क होता है. रश्क होता है उन के जीवन जीने के ढंग से, उन के प्यार करने और उस पर कुर्बान हो जाने के रंग से. उन के उस □□बात और खयालात और उन के अंदा□ से. इतना कि आज भी, 'रेखा ओ रेखा, जब से तुम्हें देखा, खाना-पीना, सोना दुश्वार हो गया, मैं आदमी था काम का बेकार हो गया.' टूट कर गाने को दलि करता है. मैं ने बहुतेरी कहानियां और उपन्यास लखि हैं. पर दो ची□ों पर लखिने की हसरत बार-बार बेकरार करती है. □क तो बुद्ध को ले कर □क उपन्यास लखिने की. दूसरे रेखा की बायोग्राफी या उन के जीवन पर □क वृहद उपन्यास लखिने की. आप कहेंगे कि क्या तुक है? बुद्ध और रेखा? दोनों दो द्वीप. कोई ओर छोर नहीं.

पर सच मानि□ जतिना मैं ने बुद्ध और रेखा को जाना है, दोनों मुझे बहुत पास-पास दखिते हैं. दोनों की यातना में काफी साम्य है. यह प्यार भी □क तपस्या है. बतर्□ ये भोग भी □क तपस्या है तुम त्याग के मारे क्या जानो! दोनों की दृष्टि आनंद की ओर है. दोनों ही जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ वाले हैं. खैर यह द्वैत-अद्वैत, दुवधि-असुवधि मेरी अपनी है. मुझे ही भोगने-भुगतने दीजि□. आप तो यहां रेखा, हमारी-अपनी रेखा पर गौर कीजि□. सोचि□ और देखि□ कि वह इस सदी के सो काल्ड महानायक से कैसे तो टूट कर प्यार करती हैं. टूट कर चूर-चूर हो जाती हैं पर शायद टूटती नहीं. और कि जुड़ी रहती हैं. प्यार के उस अटूट डोर से बंधी जुडी सहिरती- सकुचाती- ललचाती और कि अपने प्यार को जताती मुस्कुराती रहती हैं. उस अकेली, प्यार करती महलिा का दुख और सुख नहिारने में जाने कतिनी आंखें बछि-बछि जाती हैं. बहुत सारे सनि समारोह इस के गवाह हैं. चैनलों के कैमरे सायास अमतिाभ बच्चन और रेखा पर डोलते ही रहते है. अमतिाभ तो अभनिेता बन जाते हैं और ऐसे

व्यवहार करते हैं, ऐसे पेश आते हैं गोया रेखा वहां अनुपस्थति हैं या फरि वह उन्हें जानते ही नहीं. बतर्□ मतलब नकिल गया तो पहचानते नहीं. वो जा रहे हैं ऐसे हमें जानते नहीं.

पर रेखा? वह तो अंग-अंग से, रोम-रोम से अपनी उपस्थति जिताती, अपना प्यार छलकाती अपने पूरे व□ूद, अपने पूरे रौ में रहती हैं. □क सनि समारोह का वह न□ारा भूले नहीं भूलता कि ऐश्वर्या, अभषिक बच्चन और अमतिाभ बच्चन □क साथ आगे की पंक्ति में बैठे हु□ थे. रेखा अचानक आई और उन की ओर बढ़ चलीं. कसिी दुस्साहसी प्रेमकिा की तरह. गोया वह कोई वास्तवकि दृश्य न हो कर □लि्मी दृश्य हो. वह आ कर ऐश्वर्या से गले लगीं, अभषिक से गले लगीं और अभी अमतिाभ की बारी आने ही वाली थी कि वह उठ कर ऐसे भाग चले जैसे वहां कोई सुनामी आ चली हो. कैमरों ने □क-□क स्टेप उन का कैद कयिा.चैनलों ने बार-बार इस दृश्य को दखिाया, पत्रकिाओं ने छापा. अब रेखा के प्यार के इस चटक रंग को आप कसिी टेसू के फूल में वैसे ही तो घोल कर भूल नहीं ही जा□ंगे? शोखयिों मे तो घोलेंगे ही प्यार के फूल के इस शबाब को. जो हो रेखा के इस प्यार की इबारत को बांचना अभभिूत करता है.

याद कीजि□ उन दनिों को. जब दो अनजाने □लि्म रलिी□ हुई थी और अमतिाभ जया को भुला कर रेखा के रंग में रंग ग□ थे. इतना कि तब चर्चा चली थी कि अमतिाभ रेखा की शादी हो गई. खैर शादी हुई ऋषि कपूर और नीतू संहि की. रेखा-अमतिाभ भी आ□. रेखा के माथे पर संदिूर, पांव में बछिया पर लोगों

Written by दयानंद पांडेय
Thursday, 12 May 2011 14:18

ने न सरि□ गौर कयिा बल्कि अखबारों में ऋषि- नीतू की शादी की जगह रेखा-अमतिाभ की फोटो छपी. जसि में रेखा के माथे पर लगे सदिूर की शोखी कुछ □यादा ही शुरूर में थी. खैर रेखा ने इस के पहले भी प्यार कि□ थे. अच्छे-बुरे. बाद में भी कि□. पर वो सौतन की बेटी में उन्हीं पर □लि्माया □कगाना है - हम भूल ग□ रे हर बात मगर तेरा प्□यार नहीं भूले. झूले तो कई बाहों में मगर तेरा साथ नहीं भूले. के शब्दों का ही जो सहारा लें तो कहें कि वह अमतिाभ बच्चन को, उन के साथ को अभी तक नहीं भूली है, आगे भी खैर क्या भूलेंगी? और अब तो उड़ती सी खबर आ□ भी कुछ दनि हो चले हैं कि वह अमतिाभ बच्चन के साथ कसिी □लि्म में उन की पत्नी की भूमकि में आ रही हैं. खुदा खैर करे. और कि वह □लि्म आ□ ही आ□.

अब लगभग वधिवा जीवन [हालां कि उन के जीवन व्यवहार में यह वैधव्य कहीं दीखता नहीं, माथे पर चटक सदिूर मय मंगलसूत्र के अभी भी खलिता है.] जी रही रेखा, हालां कि मुकेश अग्रवाल से उन के ही □ारम हाऊस में हु□ प्रेम फरि शादी और फरि मुकेश की आत्म हत्या प्रसंग को □कक्षणकि सुनामी मान भूल जाया जा□ तो भी रेखा ने दरअसल जैसे ढेरों रद्दी □लि्मों में काम कयिा, कमोवेश उसी अनुपात में इधर-उधर मुंह भी खूब मारा. जसि की कोई मुकम्मल □हरस्ति नहीं बनती. ठीक वैसे ही जैसे उन्हों ने गनिती की कुछ श्रेष्□ठ □लि्में कीं कुछेक □लि्मों में सर्वश्रेष्□ठ अभनिय कयिा. कमोबेश इसी अनुपात में सर्वश्रेष्□ठ प्रेम भी उन्हों ने कयिा और डंके की चोट पर कयिा. करिन कुमार, वनिोद मेहरा, राज बब्बर, जतिेंद्र, राजेश खन्ना, वनिोद खन्ना, धर्मेंद्र, शैलेंद्र सहि, अमतिाभ बच्चन और संजय दत्त, □ारूख अब्दुल्ला जैसे उन के प्रेम प्रसंग के तमाम बेहतरीन पड़ाव हैं. ठीक वैसे ही दो अंजाने, खूबसूरत, घर, उमराव जान, उत्सव और इ□ा□त उन की बुलंद अभनिय यात्रा के उतने ही महत्वपूर्ण बदिु हैं. बहुत ही महत्वपूर्ण.

दरअसल 1975 से 1985 तक का समय रेखा के लि□ बड़ा महत्वपूर्ण है. इसी बीच वह अपने प्रेम प्रसंग के सब से महत्वपूर्ण पड़ाव अमतिाभ बच्चन से जुड़ीं और लगभग उन की हमस□र बन गईं. इन्हीं दस सालों में उन्हों ने खूबसूरत, उमराव जान, उत्सव जैसी □लि्मों में काम कयिा और अपनी चुलबुली छवि को चूर कयिा. चूर उन के सपने भी हु□. सलिसलिा आई और अमति जनि्हें वह बाद में 'वो' तक कहने लगी थीं, पहनने मंगलसूत्र भी लगी थीं, का संग साथ छूट गया. सहारा बने संजय दत्त. इन्हीं दनिों मुज□□र अली की उमराव जान आ कर उन्हें जान दे गई थी. क्यों कि तब तक व्यावसायकि सनिेमा में नंबर वन की पो□ीशन उन से पंगा लेने लगी थी. लेकनि उमराव जान की सादगी ने उन की शान बढ़ा दी थी. तभी □करो□ उन की संजय दत्त से शादी की खबर आ गई. दल्लिी के □कसांध्य दैनकि ने सब से पहले यह खबर न सरि□ उछाल कर छापी बल्कि पहले पे□ पर बैनर बना कर छापी थी मय फोटो के.

मुझे याद है तब प्रसदि्ध □लि्म पत्रकार अरवदि कुमार [□लि्मी पत्रकि माधुरी के संस्थापक संपादक जो तब सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट के संस्थापक संपादक थे और मैं उन का सहयोगी था तब.] इस खबर से बड़ा उदास हो ग□ थे. इस लि□ नहीं कि रेखा ने अपने से 12-14 बरस छोटे संजय दत्त से शादी कर ली थी. बल्कि इस लि□ कि □कअभनेत्री जो अब अभनिय के शखिर को छू रही थी, शादी के बाद से सेल्यूलाइड की दुनयिा के सैल्यूट कर जा□ गी. हुआ भी यही. खैर तब की ठुकराई रेखा को फरि व्यापारी मुकेश अग्रवाल की छांव मलिी. जो अंतत: मृगतृष्□णा ही साबति हुई. हालां कि उन्हीं दनिों सारकि जब बनि व्याह के ही कमल हासन के बच्ची की मां बनीं तब रेखा को कुछ लोगों ने कुरेदा तो वह अपने को रोक नहीं पाईं और धैर्य खो रहे लोगों को धीरज बंधाया,' घबराइ□ नहीं बनि ब्याही मां नहीं बनूंगी.' और अपना कहा वह दुर्भाग्य से ब्याह के बाद भी नभिा नहीं सकीं. शायद मातृत्व सुख उन के नसीब में नहीं था. वह रेखा जो अपनी ही खचिी-गढ़ी रेखाओं से आड़े- तरिछे, तरि्यक, समानांतर-वक्र करती काटती रही हैं.

खैर, आप सत्तर के दशक की शुरुआत वाली उन की उन □लि्मों की याद कीजि□ जनि में वह नवीन नशि्चल, वशि्वजीत, करिन कुमार, रणधीर कपूर, वनिोद मेहरा, और फरि जतिेंद्र और धर्मेंद्र के साथ हीरोइन रही हैं. जनि में वह मह□ शो-पीस वाली, हीरो के गले से लपिट कर नाच कूद बस गाने गाती होती हैं. खलिंदडी, शोखी और चुलबुलाहट में तर, अभनिय की ऐसी-तैसी करती होती हैं. सावन भादो से ले कर अनोखी अदा, कस्मित तक की उन की □लि्मी यात्रा [अभनिय यात्रा नहीं] भी दरअसल दूसरे, तीसरे दर्□ की □लि्मों में देह दखिाऊ यात्रा भी है. भले ही वह मैक्सी ही क्यों न पहने हों, या साडी ही सही उन के कुल्हे मटकने ही होते थे. भारी-भारी नतिंब और स्तन 'दखिने' ही 'दखिने' होते थे. तब रेखा थुलथुल होती जा रही थीं. बाद में वह न सरि□ व□न कम करने में लग गईं बल्कि योगा पर भाषण भी भाखने लगीं.

Written by दयानंद पांडेय
Thursday, 12 May 2011 14:18

वही रेखा इस के बाद के दौर में अमिताभ बच्चन, जितेंद्र, विनोद खन्ना, शशि कपूर आदि की □वरिट हिरोइन होते-होते हेमा मालिनी से नंबर वन की पो□ीशन छीन बैठती हैं. तो लोगों को अचरज होने लगता है. कि अरे ये तो वही रेखा हैं. वह जब जुदाई में जीतेंद्र के साथ बारिश में भीग कर जादू चलाती हुई गाती हैं, 'मार गई मुझे तेरी जुदाई, डस गई ये तनहाई' तो सीटियां बजवाती हैं और उसी □ल्म में फिर वृद्धा की भूमिका कर वह लोगों से आंसू भी बहवा लेती हैं. बाद में तो जीतेंद्र के साथ ढेरों □ल्मों में वह जवानी और बुढ़ापे दोनों की भूमिका में आईं. अमिताभ बच्चन जब नंबर वन हु□ तो उन की लगभग हर तीसरी □ल्म की हिरोइन रेखा ही हुईं. मुक्द्दर का सिकंदर बनीं, वह ही सलामे इश्क मेरी जां □रा कुबूल कर ले गाती रहीं. नटवरलाल में परदेसिया ये सच है पिया, सब कहते हैं मै

ने तेरा दिल ले लिया भी वही गा रही थीं. लेकिन सच यह भी है कि अगर सिलसिला जो इन दोनों की अब तक की अंतिम □ल्म है, को छोड़ दें तो अमिताभ के साथ की गई रेखा की □ल्मों में रेखा की कोई यादगार या महत्□वपूर्ण भूमिका याद नहीं आती.

हां, आलाप की याद आती है. शायद इस लि□ भी कि अमिताभ की □ल्मों में हिरोइन के हिस्से कुछ बचता ही नहीं रहा है. [हालां कि अमिताभ अभिनीत □·□ीर, अभिमान, शोले और की □कन□र भी जोड लें में, जया उन की हिरोइन हैं और अपनी उपस्थिति भी दर्□ कराती हैं, तो शायद इस लि□ भी कि वह पहले से स्थापित और कि बड़ी हिरोइन हैं] तो सिलसिला में अमिताभ के बावजूद रेखा ने अभिनय की रेखा□· गढ़ीं तो सिर्□ इस लि□ कि यहां विरह उन के हिस्से न था तो भी विरहिणी की सी आकुलता को उन्हें जीना था. जया और संजीव कुमार की उपस्थिति ने उसे और सघन बनाया. 'नीला आसमां सो गया' गा के उसे हेर लेना चाहती हैं. 'कुही कुहे ना लंबुआ' के दिनों को फिर से फिरा लेना चाहती हैं. क्यों कि वह विरहिणी हैं पर हिरनियों सी कुलांच भी भरना जानती हैं. तो यह त्रासद संयोग और उस चरित्र की बुनावट को रेखा से भी सुंदर कोई बीन भी सकता था भला?

दरअसल मुझे लगता है कि रेखा विरह की ही नायिका हैं. जहां-जहां और जब-जब विरह उन के हिस्से आया है, विरहिणी को जिस कोमलता से वह 'बेस' देती हैं उन के समय की नायिकाओं में उन के मानिंद कोई और नहीं दीखती. विरहिणी की अकुलाहट की सघनता को घनत्व देने वाली नायिका□· तो हैं.पर उसे सहजता भरी सादगी भी देने वाली? और उस सहजता में भी चुलबुलापन चुआने वाली? मेरी मंशा यहां त्रिषकेश मुखर्जी की दो □ल्मों 'खूबसूरत' और 'आलाप' की याद दिलाने की है. 'खूबसूरत' जब आई तो लोग यकायक चकित हो चले कि क्या यह वही खिलंदड़, थुलथुल [नमक हराम में भी यह रूप था रेखा का.] देह दिखाती, इतराती फिरने वाली रेखा है? 'खूबसूरत' तो समूची □ल्म ही खूबसूरत थी. पर रेखा? रेखा के तो कैरियर का बदलाव ही इसी □ल्म से हुआ जो बाद में क्लयुग, उत्सव, उमराव जान और इ□ा□त में जा पहुंचा.

फिर आई मु□□□र अली की उमराव जान. उमराव जान में उन के हीरो थे □ारूख शेख और राज बब्बर. पर जैसे खूबसूरत □ल्म रेखा के ही इर्द-गिर्द घूमती थी, उमराव जान में केंद्रीय भूमिका ही उन्हीं की थी. पर जिस लयबद्धता में उमराव जान को उन्हों ने अपने आप में उतारा, जिया और जीवन दिया कोई दूसरी अभिनेत्री उसे वह रंग शायद न दे पाती. उन की विरहिणी का यही शोला 'उत्सव' में आ कर भड़क जाता है. मन क्यों बहका रे बहका आधी रात को गीत में तो जैसे वह क्लेजा काढ़ लेती है.शशि कपूर की गिरीश कर्नाड निर्देशित उत्सव हालां कि अपने कुछ उत्तेजक दृश्यों के लि□ □ियादा जानी गई. और रेखा के बोल्ड सीन के आगे उन का अभिनय लोगों की आंखों में कम ही समा पाया. पर दरअसल रेखा के अभिनय का बारीक रेशा हमें उत्सव में ही मिलता है. अभिनय की जो बेला रेखा ने उत्सव में महकाई है वह हिंदी □ल्मों में विरल ही है.

इस के कुछ ही समय बाद आई खून भरी मांग भी तहलका मचा गई थी. और लोगों ने रेखा में बदले की आग ढूंढने की कोशिश की और उस में सफलता भी पा ली. पर अगर आंख भर जो आप 'खून भरी मांग' की रेखा को देखें, रेखा की आंखों को देखें तो वहां विरहिणी की ही आंखें, हिरनी ही की आंखें आप को दिखेंगी. मुझे तो रेखा की आंखें दरअसल विरह में डूबी नहीं, बल्कि विरह में बऊराई, विरह में नहाई दीखती हैं. अब यह तो निर्देशक पर मुनसर करता है कि वह उन से क्या करवाता है? आप याद कीजि□ मल्टीस्टारर □ल्म नागिन की. जिस में रेखा भी हैं. नागिन के दंश में डूबी उन की आंखों में मादकता का

Written by दयानंद पांडेय
Thursday, 12 May 2011 14:18

महुआ और वरिह क वरिवा □क साथ वेधता है. तो लोग घायल भी होते हैं और पागल भी. फरि तेरे इश्क क मुझ पे हुआ ये असर है गाना सोने पर सुहागा क काम कर जाता है. होने को इस □ल्मि में रीना राय, योगिता बाली आदि अभनित्रियां भी हैं पर वह, वह कमाल नहीं दखिा पातीं जो रेखा कर गु□रती हैं.

नहीं, करने को तो उन्हों ने वनिोद पांडेय की □क घटयिा सी □ल्मि □क नया रशि्ता राजकरिण के साथ की. पर वनिोद पांडेय उन की वरिहणिी आंखों को न तो बांच पा□, न व्यौरा दे पा□. जब कि रेखा अपनी शुरुआती □ल्मि धर्मा तक में- जसि में नवीन नशि्चल हीरो हैं, अपनी आंखों क खूब इस्तेमाल कयिा है. इस □ल्मि में □क कव्वाली है, 'इशारों को अगर समझो, रा□ को रा□ रहने दो. है तो प्राण और बंदि के हस्सि्से पर वषिय रेखा ही हैं और तसि पर इस में उन की आंखों क ब्□यौरा बांचना व्याकुल कर जाता है. यहां तक कि कई फसिड्डी □ल्मिों जैसे कि 'माटी मांगे खून' जसि में कि शत्रुघ्□न सनि्□हा उन के हीरो हैं या फरि 'कलिा' जसि में दलिीप कुमार उन के हीरो हैं, जैसी बहुतेरी □ल्मिें हैं, जहां उन की आंखों, बौराई आंखों क अच्छा ट्रीटमेंट है. खास कर गुलाम अली द्वारा गा□ गीत 'ये दलि, ये पागल दलि मेरा' □ल्मिाया भले शत्रु पर गया है पर □ोकस रेखा और उन की आंखों पर ही है.

मैं जो बार-बार रेखा की आंखों में वरिह की लौ बार-बार जला-जला दखिा रहा हूं तो आप कतई संभ्रम में न पड़ें कि रेखा की आंखें वरिह क ही वरिवा बांधे रहती हैं हमेशा. ऐसा भी नहीं है. उन की आंखों में मस्ती भी है और मादकता भी भरपूर. तभी तो मु□□्□र अली को उमराव जान में शहरयार से रेखा की आंखों की खातरि □क पूरी ग□ल ही कहलवानी पड़ी, 'इन आंखों की मस्ती के मस्ताने ह□ारों हैं.' बात भी सच है. और यह शम्मअ-□ □रो□ा कसिी आंधी से डरने वाली भी नहीं है. यकीन न हो तो कसिी अमतिाभ बच्चन-वच्चन से नहीं, शहरयार से पूछ लीजा□. आमीन!

□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□. □□□□□□□ □□ □□□□□□□ 09415130127, 09335233424 □□ dayanand.pandey@yahoo.com □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□.